❍ 21 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *देह अभिमान के अवगुण को निकाला ?*

➢➢ *बाप समान निरहंकारी बनकर रहे ?*

➢➢ *रहम की भावना को इमर्ज कर दुःख दर्द की दुनिया को परिवर्तित किया ?*

➢➢ *ज्ञान और योग के पंख मज़बूत रहे ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बने, तो *अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का रेसपान्ड विदेही बनकर दो। सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं संगमयुगी सच्चा ब्राह्मण हूँ"*

〰✧ *अपने को संगमयुगी सच्चे ब्राह्मण समझते हो! वह हैं नामधारी ब्राह्मण और आप हो पुण्य का काम करने वाले ब्राह्मण।*

〰✧ *ब्राह्मण अर्थात् स्वयं भी ऊँची स्थिति में रहने वाले और दूसरों को भी श्रेष्ठ बनाने के निमित्त बनने वाले। यही आपका काम है।*

〰✧ *सदा बेहद बाप के हैं बेहद की सेवा के निमित्त हैं, यही याद रखो। बेहद सेवा ही उड़ती कला में जाने का साधन है।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ बाप क्वेचन भी सुना रहे हैं, टाइम भी बता रहे है, फिर भी देखो कितने नम्बर बन जाते हैं। कहाँ 8 दाने का पहला नम्बर और कहाँ 16,000 का लास्ट नम्बर! कितना फर्क हुआ! क्वेचन सेकण्ड का वही होगा - *पहले नम्बर के लिए भी तो 16,000 के लास्ट नम्बर वाले के लिए भी क्वेचन एक ही होगा।*

〰✧ और कितने समय से सुना रहे हैं? तो सभी नम्बरवन आने चाहिए ना। इसी को ही अपने यादगार में 'नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप' कहा है। बस, *सेकण्ड में मेरा बाबा दूसरा न कोई।* इस सोचने में भी समय लगता है लेकिन टिक जाएँ हिले नहीं। यह भी नहीं - सेकण्ड तो हो गया, *यह सोचा तो भी फेल हो जायेंगे।*

〰✧ कई बार जो पेपर देते हैं, वह इसी बात में ही फेल हो जाते हैं। क्वेचन पर जो लिखा हुआ होता है कि यह क्वेचन 5 मिनट का, यह 10 मिनट का, तो यही देखते हैं कि 5 मिनट, 10 मिनट हो तो नहीं गया। *समय को देखते, क्वेचन का उतर देना भूल जाते हैं।* तो यह अभ्यास चलते-फिरते, बीच-बीच मे करते रहो।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂
☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ तो जिस समय 'मैं' शब्द-यूज़ करते हो उस समय ये सोचो कि मैं कौन? मैं शरीर तो हूँ ही नहीं ना। बॉडी-कॉन्सेसनेस तब आवे जब मैं शरीर हूँ। *शरीर तो मेरा कहते हो ना? कि मैं शरीर कहते हो? कभी ग़लती से कहते हो कि मैं शरीर हूँ? ग़लती से भी नहीं कहेंगे ना कि मैं शरीर हूँ। तो 'मैं' शब्द और ही स्मृति और समर्थी दिलाने वाला शब्द है, गिराने वाला नहीं है।* तो परिवर्तन करो। विश्व-परिवर्तक पक्के हो ना? देखना कच्चे नहीं बनना। *तो 'मैं' शब्द को भी अर्थ से परिवर्तन करो। जब भी 'मैं' शब्द बोलो, तो उस स्वरूप में टिक जाओ और जब 'मेरा' शब्द-यूज़ करते हो तो सबसे पहले मेरा कौन?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- गरीब नवाज बाप से ज्ञान मुट्ठी ले, साहूकार बन, बाप समान बनना*"

➳ _ ➳ खुबसूरत गुलाबो से महकते उपवन में टहलते हुए मै आत्मा... काँटों के साथ शान से मुस्कराते खुबसूरत गुलाब को देख... मीठे बाबा संग अपने

महकते जीवन के चिंतन में डूबी हुई... मीठे बाबा के यादो की बाँहों में झूलने लगती हूँ... बाबा के बिना जीवन कितना गरीब और दुःख भरे काँटों से सना था... आज देह भान में आये दुःख के सारे कांटे नीचे हो गए है... और *रूहानियत से भरी मै आत्मा... महकता गुलाब बनकर, सब बातो से ऊपर उठकर, शिखर पर सजी हुई... पूरे विश्व को अपने गुणो की सुगन्ध से... बरबस दीवाना बना रही हूँ.*.. ईश्वर बागबाँ के साथ, जीवन गुणो और शक्तियो की खुशबु से अमीर हो गया है... यही जज्बात मीठे बाबा को सुनाने मै आत्मा झोपडी में पहुंचती हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को ज्ञान धन से विश्व का मालिक सजाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वर पिता जो अतुलनीय खजाने और ज्ञान रत्नों का अम्बार, आप बच्चों के लिए प्यार की बाँहों में भरकर लाये है..*. उस ज्ञान धन को पाकर, सदा के लिए अमीरी से भरपूर हो जाओ... ईश्वरीय गुण और शक्तियो को स्वयं में धारण कर, बाप समान बनकर, इस विश्व धरा पर सुखो में मुस्कराओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से पायी ज्ञान धन की दौलत से शहशाह बनकर कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा आपकी प्यार भरी छत्रछाया में खुशनुमा फूल बनकर खिल गयी हूँ... गुणो और शक्तियो से सजधज कर बाप समान हो गयी हूँ... ज्ञान रत्नों को पाकर मालामाल हो गयी हूँ... और *आपके मीठे प्यार के साये तले रूहानी गुलाब हो, मुस्करा उठी हूँ,.*.."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा का रूहानी श्रंगार करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... भगवान पिता बनकर, आप बच्चों के लिए ही तो धरा पर उतर आया है... *अपनी सारी जागीर आपको ही तो देने आया है... सुखो की अमीरी में, सदा की खुशियां से, झोली भरने आया है.*.. ऐसे प्यारे पिता की यादो में सदा के लिए, साहूकार बनकर मुस्कराओ... मीठे बाबा के प्यार की छाँव में, सहज ही बाप समान बन जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के मीठे प्यार में पुलकित होकर झूमते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... *आपने मुझ आत्मा के जीवन में आकर, मुझे महान भाग्यशाली बना दिया है.*.. देह के भान में आकर, मै आत्मा गुणहीन, शक्तिहीन होकर कितनी गरीब हो गयी थी... आपने प्यारे बाबा मुझे पुनः मेरी खोयी अमीरी से भर दिया है..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को गुणो और शक्तियो से मालामाल करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... *ईश्वरीय ज्ञान धन ही सच्ची अमीरी है, जो देवताई सुखो को कदमो में सजाती है.*.. मीठे बाबा की याद और ज्ञान धन से साहूकार हो, स्वर्ग का सुखो भरा राज्य भाग्य पाओ... प्यारे बाबा को हर पल, यादो में बसाकर, बाप समान बन, खुशियो की बहारो में, सदा का खिल जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को बड़े ही प्यार से निहारते हुए कहती हूँ :-* "मीठे जादूगर बाबा मेरे... *आपने अपनी प्यार भरी गोद में मुझ आत्मा को बिठाकर, मुझे देवताई सौंदर्य से निखारा है.*.. मै आत्मा आपकी यादो के हाथ को पकड़कर, दुखो के जंगल से निकल, सुखो की पगडण्डी पर आ गयी हूँ... मेरा जीवन ईश्वरीय खुशियो से महक उठा है..."मीठे बाबा से अथाह धन दौलत को लेकर मै आत्मा... स्थूल देह में आ गयी..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अविनाशी ज्ञान धन जो बाप से मिल रहा है, उसका दान करना है*"

➳ _ ➳ ज्ञान के सागर अपने शिव पिता परमात्मा द्वारा मुरली के माध्यम से हर रोज प्राप्त होने वाले मधुर महावाक्यों को एकांत में बैठ मैं पढ़ रही हूँ

और *पढ़ते - पढ़ते अनुभव कर रही हूँ कि ब्रह्मा मुख द्वारा अविनाशी ज्ञान के अखुट खजाने लुटाते मेरे शिव पिता परमात्मा परमधाम से नीचे साकार सृष्टि पर आकर मेरे सम्मुख विराजमान हो गए हैं*। अपने मुख कमल से मेरी रचना कर मुझे ब्राह्मण बनाने वाले मेरे परम शिक्षक शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा की भृकुटि पर बैठ ज्ञान की गुह्य बातें मुझे सुना रहें हैं और *मैं ब्राह्मण आत्मा ज्ञान के सागर अपने शिव पिता के सम्मुख बैठ, ब्रह्मा मुख से उच्चारित मधुर महावाक्यों को बड़े प्यार से सुन रही हूँ और ज्ञान रत्नों से अपनी बुद्धि रूपी झोली को भरपूर कर रही हूँ*।

➳ _ ➳ मुरली का एक - एक महावाक्य अमृत की धारा बन मेरे जीवन को परिवर्तित कर रहा है। *आज दिन तक अज्ञान अंधकार में मैं भटक रही थी और व्यर्थ के कर्मकांडो में उलझ कर अपने जीवन के अमूल्य पलों को व्यर्थ गंवा रही थी*। धन्यवाद मेरे शिव पिता परमात्मा का जिन्होंने ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर मुझे अज्ञान अंधकार से निकाल मेरे जीवन मे सोझरा कर दिया। अपने शिव पिता परमात्मा के समान महादानी बन अब मुझे उनसे मिलने वाले अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान सबको कर, सबको अज्ञान अंधकार से निकाल सोझरे में लाना है।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता के स्नेह का रिटर्न अब मुझे उनके फरमान पर चल, औरो को आप समान बनाने की सेवा करके अवश्य देना है। *अपने आप से यह प्रतिज्ञा करते हुए मैं देखती हूँ मेरे सामने बैठे बापदादा मुस्कराते हुए बड़े प्यार से मुझे निहार रहें हैं। उनकी मीठी मधुर मुस्कान मेरे दिल मे गहराई तक समाती जा रही है*। उनके नयनों से और भृकुटि से बहुत तेज दिव्य प्रकाश निकल रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे प्रकाश की सहस्त्रो धारायें मेरे ऊपर पड़ रही है और उस दिव्य प्रकाश में नहाकर मेरा स्वरूप बहुत ही दिव्य और लाइट का बनता जा रहा है। *मैं देख रही हूँ बापदादा के समान मेरे लाइट के शरीर में से भी प्रकाश की अनन्त धारायें निकल रही हैं और चारों और फैलती जा रही हैं*।

➳ _ ➳ अब बापदादा मेरे पास आ कर मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर अपने सभी अविनाशी खजाने, गुण और शक्तियां मुझे विल कर रहें हैं। *बाबा के हस्तों से निकल रहे सर्व ख़ज़ानों, सर्वशक्तियों को मैं स्वयं में समाता हुआ स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ*। बापदादा मेरे सिर पर अपना वरदानी हाथ रख मुझे "अविनाशी ज्ञान रत्नों के महादानी भव" का वरदान दे रहें हैं। वरदान दे कर, उस वरदान को फलीभूत कर, उसमे सफलता पाने के लिए बाबा अब मेरे मस्तक पर विजय का तिलक दे रहें हैं। *मैं अनुभव कर रही हूँ मेरे लाइट माइट स्वरूप में मेरे मस्तक पर जैसे ज्ञान का दिव्य चक्षु खुला गया है जिसमे से एक दिव्य प्रकाश निकल रहा है और उस प्रकाश में ज्ञान का अखुट भण्डार समाया है*।

➳ _ ➳ महादानी बन, अपने लाइट माइट स्वरूप में सारे विश्व की सर्व आत्माओ को अविनाशी ज्ञान रत्न देने के लिए अब मैं सारे विश्व मे चक्कर लगा रही हूँ। मेरे मस्तक पर खुले ज्ञान के दिव्य चक्षु से निकल रही लाइट से ज्ञान का प्रकाश चारों और फैल रहा है और सारे विश्व में फैल कर विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्म परिचय दे रहा हैं। *सर्व आत्माओं को परमात्म अवतरण का अनुभव हो रहा है। सभी आत्मायें अविनाशी ज्ञान रत्नों से स्वयं को भरपूर कर रही हैं*। सभी का बुद्धि रूपी बर्तन शुद्ध और पवित्र हो रहा है। ज्ञान रत्नों को बुद्धि में धारण कर सभी परमात्म पालना का आनन्द ले रहे हैं।

➳ _ ➳ लाइट माइट स्वरूप में विश्व की सर्व आत्माओं को अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दे कर, अब मैं साकार रूप में अपने साकार ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर महादानी बन मुख द्वारा अपने सम्बन्ध संपर्क में आने वाली सभी आत्माओं को आविनाशी ज्ञान रत्नों का दान दे कर, सभी को अपने पिता परमात्मा से मिलाने की सेवा निरन्तर कर रही हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में, डबल लाइट स्थिति का अनुभव करते अपनी स्थिति से मैं अनेको आत्माओं को परमात्म प्यार का अनुभव करवा रही हूँ। परमात्म प्यार का अनुभव करके वो सभी आत्मायें अब परमात्मा द्वारा मिलने वाले अविनाशी ज्ञान रत्नों को धारण कर अपने जीवन को खुशहाल बना रही हैं*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं रहम की भावना को इमर्ज कर दुख दर्द की दुनिया को परिवर्तन करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर मर्सीफुल आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा ज्ञान और योग के दोनों पंखों को मजबूत करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव उड़ती कला का अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ ब्राह्मण आत्माओं के निजी संस्कार कौन से हैं? क्रोध या सहनशक्ति? कौन सा है? सहनशक्ति, शान्ति की शक्ति यह है ना! तो अवगुणों को तो सहज ही संस्कार बना दिया, कूट-कूट कर अन्दर डाल दिया है जो न चाहते भी निकलता रहता है। ऐसे हर गुण को अन्दर कूट-कूट कर संस्कार बनाओ। मेरा निजी संस्कार कौन सा है? यह सदा याद रखो। वह तो रावण की जायदाद संस्कार बना दिया। पराये माल को अपना बना लिया। अब बाप के खजाने को अपना बनाओ। *रावण की चीज को सम्भाल कर रखा है और बाप की चीज को गुम कर देते हो, क्यों? रावण से प्यार है! रावण अच्छा लगता है या बाप अच्छा लगता है?* कहेंगे तो सभी बाप अच्छा लगता है, यही मन से कह रहे हैं ना? लेकिन जो अच्छा लगता है उसकी बात निश्चय की स्याही से दिल में समा जाती है।

➳ _ ➳ जब कोई रावण के संस्कार के वश होते हैं और फिर भी कहते रहते हैं - बाबा आपसे मेरा बहुत प्यार है, बहुत प्यार है। बाप पूछते हैं कितना प्यार है? तो कहते हैं आकाश से भी ज्यादा। *बाप सुनकरके खुश भी होते हैं कि कितने भोले बच्चे हैं। फिर भी बाप कहते हैं कि बाप का सभी बच्चों से वायदा है - कि दिल से अगर एक बार भी 'मेरा बाबा' बोल दिया, फिर भले बीच-बीच में भूल जाते हो लेकिन एक बार भी दिल से बोला 'मेरा बाबा', तो बाप भी कहते हैं जो भी हो, जैसे भी हो मेरे ही हो।* ले तो जाना ही है। सिर्फ बाप चाहते हैं कि बराती बनकर नहीं चलना, सजनी बनकर चलना।

✺ *ड्रिल :- "रावण की जायदाद को छोड़ बाप की जायदाद को सम्भालना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा एक बहुत ही सुंदर बगीचे में बैठी हूं... जहां रंग बिरंगे फूल खिल रहे हैं... और फूलों पर तितलियां मंडरा रही है... और आस-पास बहुत ही मनमोहक हरियाली हो रही है... और इस हरियाली में अनेक तरह तरह के पक्षी चहचहा रहे हैं... मैं आत्मा एक स्थान पर बैठकर यह सारा नजारा अपने इन स्थूल नेत्रों से देख रही हूं...* और देख रही हूं कुछ पक्षी आपस में लड़ रहे हैं... और कभी कभी आपस में प्रेम कर रहे हैं... उनका लड़ना झगड़ना देखकर

मैं अब अपनी दृष्टि तितलियों पर डालती हूँ... तितली जिस फूल पर बैठी है उस फूल में से एक भंवरा बाहर निकल कर उस तितली को कस के पकड़ना चाह रहा है... और तितली उसके कसके पकड़ने से बहुत ही तड़प रही है...

➳ _ ➳ और कुछ समय बाद मैं देखती हूं... कि वह भंवरा तितली को तड़पता हुआ देखकर छोड़ देता है... और तितली फर से उड़ जाती है... यह प्रक्रिया वह भंवरा बार बार दोहरा रहा है... पर तितली बार-बार उड़ जाती है... फिर मैं देखती हूँ की वह भंवरा शांत स्वरुप स्थिति में आराम से उस फूल पर बड़े स्नेह से बैठ जाता है... और जब वह तितली आती है तो उसे छूने की कोशिश करता है... उस तितली को भँवरे के स्नेह का आभास होता है... और वह आराम से उस फूल पर बैठकर फूलों से रस निकालती है... यह दृश्य देखकर मुझे आभास होता है कि *जब भँवरे के रावण के संस्कार थे तो तितली उससे दूर भाग रही थी... और जब वह अपने स्वधर्म में आया तो तितली उधर ही बैठ गयी...*

➳ _ ➳ और मेरे अंतर्मन को आभास होता है... कि *मेरे अंदर जो पुराने संस्कार हैं काम क्रोध लोभ मोह अहंकार अगर इनके अंश भी है तो धीरे-धीरे इनका वंश बनने में समय नहीं लगेगा... और यह जो पुराने संस्कार है वह मेरे अपने संस्कार नहीं है... वह रावण के संस्कार हैं...* रावण की मत पर चलकर मैंने इतने समय से सिर्फ अपने साथ और अन्य आत्माओं के साथ गलत कर्म ही किए हैं... और इन कर्मों के कारण मेरा विकर्मो का खाता बढ़ता ही जा रहा है... और तभी मुझे आभास होता है कि मुझे अब इन रावण के अंश विकारों का भी अपने मन बुद्धि से त्याग करना होगा...

➳ _ ➳ और यह विचार करते मैं आत्मा अब अपने मन बुद्धि से अपने आप को फरिश्ता स्वरुप में अनुभव करती हूं... और परमात्मा को अपने साथ ज्योतिर्बिन्दु रूप में अनुभव करती हूँ... और फील करती हूं मेरा पूरा शरीर सफेद किरणों से जगमगा रहा है... और अनुभव करती हूँ... की *परमात्मा मुझमें अदभुत शक्ति भर रहे हैं... शक्तियों का झरना मुझपर कुछ तरह से गिरता है

कि मुझे प्रतीत होता है मानों स्वयं मेरे बाबा मुझमें नये संस्कार भर रहे हो... और जैसे जैसे ये झरनों रूपी संस्कार मुझमें भरते हैं... मेरे पुराने संस्कार पानी के रूप में मेरे शरीर से निकलकर बहते जा रहे हैं... और अब मैं आत्मा एकदम पवित्र और हल्की बन गई हूं...* अब मुझ आत्मा में सहनशक्ति के साथ साथ शांति की शक्ति का समावेश हो गया है... इस शांत और ऊंची स्थिति का मैं गहराई से आनंद ले रही हूं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔